ग्रन्थमाला 'गुरु' : खण्ड ४

गुरुका शिष्योंको सिखाना एवं गुरु-शिष्य सम्बन्ध

भूमिका

'ज्ञानियोंके राजा गुरु महाराज' ये शब्द हैं सन्त ज्ञानदेवजीके। जो ज्ञान दे, वह गुरु ! शिलासे मूर्ति बनाई जा सकती है; किन्तु उसके लिए कुशल शिल्पकारकी आवश्यकता होती है । इसी प्रकार, साधक तथा शिष्य ईश्वरको प्राप्त कर सकते हैं; किन्तु इसके लिए गुरुकी आवश्यकता होती है । गुरु जब अपने बोधामृतसे साधक तथा शिष्योंका अज्ञान दूर कर देते हैं, तभी उन्हें ईश्वरकी प्राप्ति होती है ।

साधक एवं शिष्योंको क्या करना चाहिए और किसका परित्याग करना चाहिए आदि का ज्ञान गुरु देते हैं । केवल उपदेशसे नहीं, अपितु साधारण प्रतीत होनेवाले बोलचालसे भी वे बहुत कुछ सिखा देते हैं । साधक तथा शिष्योंको गुरुके बोलचालका भावार्थ समझमें न आनेपर वे उनके अनमोल विचारधनसे वंचित रह जाते हैं । गुरुकी सिखानेकी विविध पद्धतियां होती हैं, उदा. विनोदसे, स्वप्नसे, अनुभूतिसे, परीक्षासे तथा सूक्ष्मसे । प्रस्तुत ग्रन्थमें इन सर्व पद्धतियोंको उदाहरणसहित समझाया गया है । इस कारण, गुरुसे विविध माध्यमोंसे सीखकर परिपूर्ण लाभ कैसे प्राप्त करना चाहिए, इस सम्बन्धमें एक नवीन दृष्टिकोण विकसित होनेमें सहायता होगी ।

हमारे गुरु प.पू. भक्तराज महाराज (बाबा) सदा कहा करते थे, 'मैं किसीका गुरु नहीं हूं; किन्तु शिष्य बनाए बिना नहीं छोडूंगा !' शिष्य अर्थात 'तत्त्वमसि', अर्थात गुरु-तत्त्वका शिष्य ! संकलनकर्ताओंमें डॉ. जयंत आठवलेजी भी अपनेआपको 'गुरु' न समझकर 'बाबाका शिष्य' मानते हैं । तब भी ये साधकोंको बाबाकी शिक्षाओंके अनुसार गुरु-तत्त्वका शिष्य बनानेके लिए अथक प्रयत्न करते हैं । 'सनातन संस्था' एवं 'हिन्दू जनजागृति समिति'के साधक एवं कार्यकर्ता उन्हें 'परात्पर गुरु' मानते हैं । डॉक्टरजीने साधकोंको सिखानेके लिए इस ग्रन्थमें अनेक उदाहरण दिए हैं।

'इस ग्रन्थसे जिज्ञासु, साधक एवं शिष्यों को साधनाके लिए आवश्यक ज्ञान भलीभांति आत्मसात करना सम्भव हो तथा उनकी यात्रा शीघ्रतासे ईश्वरप्राप्तिकी दिशामें हो', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! – **संकलनकर्ता**

गुरुके प्रति खरी कृतज्ञता !

गुरुके समष्टि कार्यमें तन-मन-धन से समर्पित होना, यही शिष्यकी गुरुके प्रति खरी कृतज्ञता है ।

संस्कारोंसे हिन्दू बनानेवाली एकमात्र 'सनातन संस्था' !

'संस्कारसे हिन्दू बनानेवाली 'सनातन संस्था' एकमात्र संस्था है । यह अब मेरी है । संस्थाके सर्व कार्यक्रमोंमें मैं स्वयं जितना हो सके उतना सहयोग करूंगा !'

– प.पू. स्वामी भक्तिस्वरूपानंदजी महाराज, गुडगांव, हरियाणा.

अनुक्रमणिका

[कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए गए हैं ।]

१. **शिष्यको ज्ञान देनेकी दृष्टिसे गुरुका महत्त्व** १३

२. **गुरुका शिष्योंको सिखाना** १३

* कविता, भजन एवं सुवचन के माध्यमसे सिखाना १४
* प्रत्यक्ष सिखाना १६
  * सन्तोंकी ओर उनके परिजनोंको उचित दृष्टिसे देखना सिखाना २३
* विनोदद्वारा सिखाना २५
* आचरणद्वारा (अप्रत्यक्ष) सिखाना २७
  * स्वयं सतत सेवारत रहकर अन्योंको सेवारत रहना सिखाना २७
* अनुभूतिद्वारा सिखाना २८
* स्वप्नद्वारा सिखाना २९
* शब्दातीत माध्यमसे (सूक्ष्म रूपसे) सिखाना ३०
* स्थूलसे सूक्ष्मकी ओर ले जाना ३२
* पंचतत्त्वात्मक रूपमें सिखाना ३३

३. **गुरु–शिष्य सम्बन्ध** ३९

* शिष्यके गत जन्मके पुण्यके कारण गुरु उसके जीवनमें आना ३९
* लौकिक दृष्टिसे शिष्यका ध्यान रखना ३९
* शिष्यकी आर्थिक स्थितिका ध्यान रखना ४१
* निष्काम शिष्योंकी सकाम इच्छा पूर्ण करना ४४
* गुरुका शिष्यकी ओर देखनेका दृष्टिकोण ४५

* शिष्यके लिए द्वैतमें आना ४८
* शिष्यको पूर्वसूचना देना ४८
* शिष्यके घर जाते समय घरवालोंको असुविधा न होने देना ४९
* शिष्यका सूक्ष्म 'मैं'पन नष्ट करना ५०
* शिष्यके स्वावलम्बी बननेपर तथा प्रगति करनेपर गुरुको आनन्द होना ५३
* शिष्यको सन्तपदके पश्चातकी प्रगतिके विषयमें मार्गदर्शन करना ५४
* शिष्यकी व्याधि एवं मृत्यु ५६
* अन्य गुरुओंके शिष्योंसे व्यवहार ५९
* शिष्योंके कारण गुरुको होनेवाले हानि एवं लाभ ६०

विहंगम मार्गसे ईश्वरतक पहुंचनेके लिए
'सनातन संस्था' द्वारा बताया जा रहा साधनामार्ग !

गुरुकृपायोग

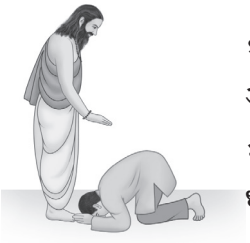

१. आचारपालन : वेशभूषा, अलंकारधारण, आहार आदि सर्व कृत्य शास्त्रानुसार करनेपर बल !

२. धर्माचरण : धर्मशिक्षा लेकर धार्मिक कृत्य धर्मशास्त्रानुसार करना !

३. अष्टांग-साधना : स्वभावदोष एवं अहं का निर्मूलन, नामजप, सत्संग, सेवा, त्याग, प्रीति (निरपेक्ष प्रेम) तथा भावजागृति के प्रयास !

४. धर्मप्रसार : समाजको धर्मशिक्षा देना !

५. धर्मरक्षा : वैधानिक मार्गसे धर्महानि रोकना !

(अधिक जानकारीके लिए पढें सनातन संस्थाकी ग्रन्थमाला : 'गुरुकृपायोगानुसार साधना')